8

कोविड-19 आपदा चुनौतियाँ, सार्थक प्रयास व पहलें

शरद सिन्हा*

कोविड-19 काल में लॉकडाउन के दौरान पूरी दुनिया में सारी गतिविधियाँ प्रभावित हुईं। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। भारत जैसे देश में जहाँ पर शिक्षा व्यापक रूप में दी जाती है और विभिन्न प्रकार के स्कूल और तरह-तरह के परिवेश से छात्र-छात्राएँ आते हैं, ऐसे देश में शिक्षा का प्रचार और प्रसार कोविड-19 काल में अपने आप में एक चुनौती के रूप में उभरा। इस महामारी का शिक्षकों ने डटकर सामना किया। शिक्षकों ने अपनी-अपनी तरह से शिक्षण-अधिगम के पहिये को थमने नहीं दिया। अलग-अलग तरह से बच्चों तक पहुँचने की और शिक्षण सामग्री पहुँचाने की कोशिश की गई। सभी के सार्थक प्रयास से इस कठिन काल में भी बच्चे पढ़ाई से वंचित नहीं रहे। ऐसा ही एक प्रयास 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने कोविड-19 काल के दौरान उभरी हुई चुनौतियों का डट कर सामना किया एवं एक उदाहरण प्रस्तुत किया। साथ ही कोविड-19 काल के दौरान उन्होंने जो तकनीकी जानकारी प्राप्त की उससे न केवल बच्चों का मनोबल बढ़ाया और शिक्षा जारी रखी, बल्कि कोविड-19 काल के बाद भी उस समय सीखे गए कौशल का अनवरत प्रयोग जारी रखा। प्रस्तुत प्रपत्र में इसी समूह की पहलों के बारे में चर्चा की गई है।

कोविड-19 काल शिक्षा जगत के लिए आपदा काल था। जब सभी गतिविधियों का पहिया थम गया था और विश्व में शिक्षा से जुड़े लोग इस विषय पर चिंतित थे कि शिक्षाक्रम को कैसे जारी रखा जाए तथा विभिन्न स्तरों पर शिक्षा क्रियाकलापों को किस तरह व्यवस्थित और सुचारु रूप दिया जाए तब इस विषय को लेकर उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के शिक्षकों से एक प्रश्नावली साझा की गई जिसमें उन्होंने इस आपदा को किस प्रकार अवसर में बदला इसके बारे में प्रश्न पूछे गए। ये सभी शिक्षक सुचारु रूप से लॉकडाउन के दौरान उपजी परेशानियों से जूझने के उपाय ढूँढ रहे थे और साथ ही एक समूह से भी जुड़े हुए थे—'मिशन शिक्षण संवाद'।

* *प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,* अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

© NCERT not to be republished

'मिशन शिक्षण संवाद', सोशल मीडिया के ज़रिए जुड़े 1 लाख रचनात्मक शिक्षकों का अपना मंच है जो 200 से अधिक व्हाट्सएप समूह के माध्यम से 30 हज़ार शिक्षकों से सीधे जुड़ा है और ट्विटर, ब्लॉग, वेबसाइट, फेसबुक पेज, फेसबुक समूह के माध्यम से शिक्षकों के शैक्षिक कार्यों और क्रियाकलापों को साझा करने और प्रोत्साहित करने का प्लेटफॉर्म देता है। विगत 5 वर्षों में 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा टीचर्स क्लब, उत्तर प्रदेश, अन्य साथियों और 1 दर्जन से अधिक राज्यस्तरीय कार्यशालाओं की मदद से अच्छे शिक्षकों को सम्मानित कर उनके कार्यों को एक पहचान दी गई तथा अनवरत शैक्षिक संवाद और शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण कर हज़ारों विद्यालयों को प्रेषित कर बेहतर शैक्षिक वातावरण निर्माण का प्रयास किया गया। 'मिशन शिक्षण संवाद' कोई रजिस्टर्ड संघ नहीं है और न ही शिक्षक अधिकार के लिए कभी धरना आंदोलन करता है, अपितु यह केवल शिक्षा के प्रसार में अपना योगदान देता है।

'मिशन शिक्षण संवाद' विचार के फाउंडर शिक्षक ने बताया कि वह पिछले 5 वर्षों से अनवरत शिक्षकों को दैनिक पोस्ट के माध्यम से विद्यालय खुलने से पूर्व शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करा रहे थे जिसमें दैनिक श्यामपट्ट कार्य, प्रतियोगिता प्रभात आदि प्रमुख थी और अध्यापक इनका प्रयोग छात्रों के लिए करते थे, परंतु लॉकडाउन होते ही सब कुछ रुक-सा गया। चूँकि अब शिक्षक विद्यालय नहीं जा रहे थे, इसलिए अब इस कार्य को समूह पर भेजने के बाद भी छात्रों तक उसे पहुँचा पाना अत्यंत कठिन था।

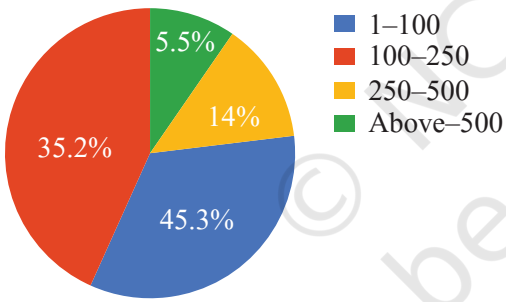

आकृति 1

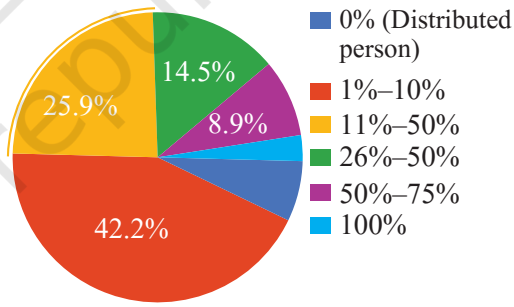

आकृति 2

लगभग 35.2 प्रतिशत स्कूलों में 100 से 250, 45.3 प्रतिशत स्कूलों में 1 से 100, 14 प्रतिशत स्कूलों में 250 से 500 और 5.5 प्रतिशत स्कूलों में 500 से ऊपर बच्चे दाखिल थे (आकृति 1)। जब लॉकडाउन के दौरन संपर्क करने की आवश्यकता हुई तब खोजने पर पता चला कि 45.2 प्रतिशत स्कूलों में 1 से 10 प्रतिशत बच्चों के पास, 25.9 प्रतिशत स्कूलों में 11 से 25 प्रतिशत बच्चों के पास, 14.5 प्रतिशत स्कूलों में 26 से 50 प्रतिशत बच्चों के पास, 8.9 प्रतिशत स्कूलों में 50 से 75 प्रतिशत बच्चों के पास और केवल 1.7 प्रतिशत स्कूलों में 100 प्रतिशत बच्चों के पास ही स्मार्टफोन और मोबाइल डाटा की उपलब्धता थी (आकृति 2)।

© NCERT not to be republished

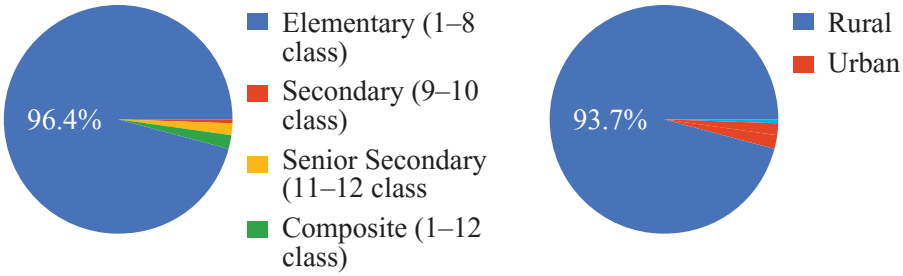

आकृति 3

कुल 2029 शिक्षकों से जो प्रश्नावली साझा की गई थी; उनमें से 96.4 प्रतिशत कक्षा एक से आठवीं तक के शिक्षक थे तथा 93.7 प्रतिशत शिक्षक ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में कार्यरत थे (आकृति 3)।

आकृति 4

इनमें से 94.2 प्रतिशत शिक्षकों के पास स्मार्टफोन था, लेकिन 62.9 प्रतिशत शिक्षकों के लिए ऑनलाइन टीचिंग का अनुभव बिलकुल नया था। सर्वेक्षण से यह भी पता लगा कि 37.1 प्रतिशत शिक्षकों को ऑनलाइन टीचिंग के संदर्भ में कुछ जानकारी थी, परंतु 62.9 प्रतिशत शिक्षक बिलकुल अनभिज्ञ थे (आकृति 4)।

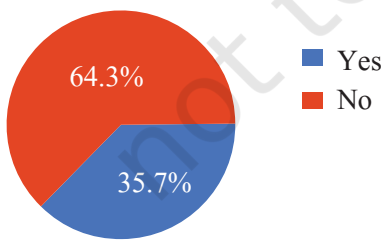

आकृति 5

केवल 35.7 प्रतिशत शिक्षकों ने किसी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण में इस महमारी के पूर्व भाग लिया था जिसमें कि आभासी माध्यम के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने और पढ़ाने की विधियों से उन्हें अवगत कराया गया हो (आकृति 5)। साथ ही यह तथ्य भी सामने आया कि अधिकांश वरिष्ठ शिक्षक और कई नए शिक्षक एंड्रॉयड फोन का प्रयोग करना नहीं जानते थे। 'मिशन शिक्षण संवाद' समूह द्वारा एक टेक्निकल टीम गठित की गई और जून की शुरुआत में टेक्निकल टीम ने निर्णय लिया कि अध्यापकों को एंड्रॉयड फोन में उपलब्ध एप और तकनीकी का प्रयोग सिखाया जाए, ताकि जुलाई में विद्यालय न खुलने की दशा में अध्यापक लॉकडाउन में बाधित शिक्षा

© NCERT not to be republished

की चुनौतियों से निपट सकें। अधिकांश शिक्षक गूगल मीट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को पहली बार इस्तेमाल कर रहे थे जो लॉकडाउन में सभी को जोड़े रखने का बेहतर माध्यम था।

लॉकडाउन में समय का बेहतर इस्तेमाल करने का उपाय मिल गया था, इसलिए मिशन के सभी जनपदों के एडमिन और तकनीकी रूप से कुछ दक्ष साथियों की मदद से पहली राजस्तरीय ऑनलाइन आई.सी.टी. कार्यशाला का प्रयोग किया गया। दस दिवसीय कार्यशाला में प्रतिदिन 2 घंटे के हिसाब से 20 घंटे निर्धारित किए। पाठ्यक्रम के लिए डिजिटल इमेज मेकिंग, एजुकेशनल वीडियो मेकिंग, मोबाइल द्वारा माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल और पावरपाइंट की मदद से स्कूल, डॉक्यूमेंटेशन, गूगल फॉर्म, डॉक, ई-मेल, ऑनलाइन डिजिटल प्लेटफॉर्म इस्तेमाल करने का कौशल और शैक्षिक एप की जानकारी को शामिल किया गया। पहले बैच से ही यह तय हो गया कि अध्यापक इसे सीखने को लालायित हैं। बैच के बाद इन अध्यापकों से यह कार्यक्रम अपने जनपद में ले जाने का आग्रह किया गया और एक 20 सदस्यीय टीम को प्रशिक्षक के रूप में तैयार करके इन कार्यक्रमों के सपोर्ट के लिए नियुक्त कर दिया गया। अब तक 'मिशन शिक्षण संवाद' ने उत्तर प्रदेश के 30 जनपदों में 3 राज्यस्तरीय और 2 राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर लगभग 7 हज़ार शिक्षकों को टेक्नोसेवी बनाने की कोशिश की है। इन शिक्षकों से यह भी अनुरोध किया गया कि वे अब अपने विद्यालय के स्टाफ और पास-पड़ोस के विद्यालय के शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने में मदद करें।

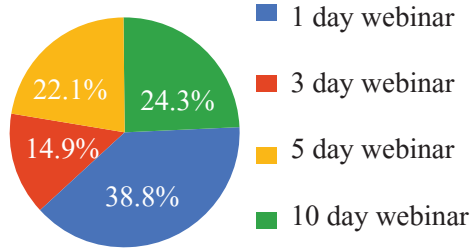

आकृति 6

इन कार्यक्रमों के उद्घाटन एवं समापन दिवस में शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित कर कार्यक्रम से जुड़े शिक्षकों को प्रेरित करने का कार्य किया गया। 'मिशन शिक्षण संवाद' सभी कार्यक्रम निःशुल्क आयोजित करवाता है तथा मिशन से जुड़ने और कार्य करने का कोई शुल्क नहीं है। मिशन के समूह पर प्रतिदिन कई शिक्षक लॉकडाउन के दौरान किए गए कार्यों को नियमित रूप से साझा करते रहे। कोविड-19 काल की महामारी के दौरान, आधिकारिक तौर पर 38.8 प्रतिशत शिक्षकों को एक दिवसीय वैबिनार, 14.9 प्रतिशत शिक्षकों को तीन दिवसीय वैबिनार, 22.1 प्रतिशत शिक्षकों को पाँच दिवसीय वेबिनार और 24.3 प्रतिशत शिक्षकों को दस दिवसीय वैबिनार में अभिविन्यास किया गया।

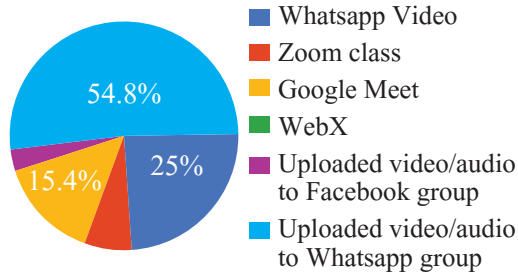

आकृति 7

© NCERT not to be republished

इस काल के दौरान 54.8 प्रतिशत अध्यापकों ने व्हाट्सएप ऑडियो/वीडियो, 3.7 प्रतिशत ने ज़ूम क्लास, 15.4 प्रतिशत ने गूगल मीट, 25 प्रतिशत ने व्हाट्सएप वीडियो के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण किया (आकृति 7)।

लॉकडाउन के चलते अधिकांश शिक्षकों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ा—

1. अभी तक जो भी सामग्री विद्यालयों तक भेज रहे थे, वह अध्यापक के माध्यम से बच्चों तक पहुँचती थी जो अब संभव नहीं था।
2. ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों के पास एंड्रॉयड मोबाइल नहीं थे और वह व्हाट्सएप का इस्तेमाल नहीं कर रहे थे।
3. अभिभावक अपने मोबाइल को छात्रों को देने को तैयार नहीं थे।
4. अभिभावक महंगे इंटरनेट रिचार्ज को लेने में सक्षम नहीं थे।
5. छात्र अभी मोबाइल से पढ़ने के आदी नहीं थे।
6. अध्यापक ऑनलाइन कक्षा जैसे किसी कांसेप्ट से परिचित ही नहीं थे।
7. अध्यापक तकनीकी रूप से मज़बूत नहीं थे और वे विभागीय ऐप के बेहतर प्रयोग से भी अनभिज्ञ थे।
8. अध्यापक डिजिटल कटेंट निर्माण और कक्षा-कक्ष में उनके प्रयोग करना नहीं जानते थे।
9. अध्यापकों को विभागीय सूचना को वर्ड, एक्सेल फॉर्मेट में बनाना और उनका डिजिटल संप्रेषण नहीं आता था।
10. अध्यापकों को अपने मोबाइल फोन का शिक्षा क्षेत्र में बेहतर प्रयोग पता नहीं था।

निदान के लिए किए गए प्रयास

1. समूह ने संदेशों के माध्यम से अध्यापकों को इस बात के लिए तैयार किया कि वे किसी माध्यम से छात्रों के मोबाइल नंबर इकट्ठा करें। चूँकि इस समय विद्यालय तक जा पाना संभव नहीं था, इसलिए स्थानीय आँगनबाड़ी कार्यकर्त्री और शिक्षामित्र का इसमें सहयोग लेने का आग्रह किया गया।
2. अध्यापक से छात्रों के अभिभावकों और छात्रों से बातचीत करने का आग्रह किया गया और उनकी सहमति से व्हाट्सएप समूह का निर्माण किया गया।
3. शैक्षिक सामग्री निर्माण टीम से आग्रह किया गया कि वह अब गृहकार्य से संबंधित इमेज का निर्माण कर जनपदीय समूह के माध्यम से बच्चों तक भेजने का प्रयास करें।
4. इस कार्य से भी बहुत ज़्यादा बच्चे नहीं जुड़ सके, परंतु सोशल मीडिया पर बच्चों के गृहकार्य से संबंधित पोस्ट के आने से बच्चों और अभिभावकों के बीच एक सकारात्मक संदेश गया और उन्हें लगा कि बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखना ज़रूरी है।
5. इस दौरान अभिभावकों को सामान्य संदेश के माध्यम से बच्चों को प्रोत्साहित और प्रेरित करने का निवेदन भी किया जाता रहा।

'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा कोविड-19 काल के दौरान करवाई गई लगभग 100 ऑनलाइन 7–10

© NCERT not to be republished

दिवसीय निःशुल्क ट्रेनिंग के दौरान अध्यापकों को वर्ड, एक्सेल और पॉवरपॉइंट के ज़रिए अभिलेखों के डिजिटल निर्माण, पिक्सेल लैब के ज़रिए डिजिटल, टी.एल.एम. इमेज निर्माण और वीडियो एडिटिंग सॉफ़्टवेयर से एजुकेशनल निर्माण सिखाया गया था और आग्रह किया गया था कि वह अपने विद्यालय के स्टाफ़ और अपने पास-पड़ोस के शिक्षकों को भी यह जानकारी देंगे।

लॉकडाउन के दौरान ही इसके व्यापक सकारात्मक परिणाम देखने को मिले थे पहले समूह में केवल 1 दर्ज़न ही शिक्षक थे जो डिजिटल इमेज बनाते थे। इस ट्रेनिंग के बाद टीम से लगभग 100 शिक्षक और जुड़े जिन्होंने विषयवार और कक्षावार डिजिटल कंटेंट निर्माण में सहयोग प्रदान करना शुरू किया। कोविड-19 काल के दौरान शिक्षकों ने अपने विद्यालयों के व्हाट्सएप समूहों का निर्माण कर वहाँ सीधे छात्रों को जोड़कर उन्हें सामग्री भेजी थी। अब इन्हीं समूहों का प्रयोग पढ़ाई से प्रतियोगिता अभियान की सामग्री भेजने और उन्हें ऑनलाइन परीक्षा तैयारी में किया जा रहा है।

विद्यालय के अभिलेखों के डिजिटल निर्माण की जानकारी के बाद अब मिशन से जुड़े शिक्षक अपनी जानकारियों को ज़्यादा सहज तरीके से बनाना/प्रिंट करना/अपलोड करना सीख गए हैं। वार्षिक परीक्षाफल आदि का निर्माण अब एक्सेल शीट पर कर पा रहे हैं। साथ ही जो छोटी-छोटी समस्याएँ उन्हें पी.डी.एफ. बनाने या मेल आदि करने में थीं, वह भी अब दूर हो चुकी हैं।

कोविड-19 काल वास्तव में 'मिशन शिक्षण संवाद' के लिए बहुत बड़ा अवसर था। ऑनलाइन प्रशिक्षण के बाद से हम न सिर्फ बच्चों को सीधे डिजिटल रूप से जोड़कर उन्हें परीक्षाओं की तैयारी करा पा रहे हैं, बल्कि कक्षाओं को डिजिटल कंटेंट से ज़्यादा जीवंत बना पा रहे हैं, साथ ही अपने दैनिक अभिलेखीकरण को भी ज़्यादा आसानी से कर पा रहे हैं। समय-समय पर डिजिटल कंटेंट को प्रभावशाली बनाने के लिए भी शिक्षकगण आपस में वार्तालाप करते हैं व कोविड-19 काल में छात्रों के लिए भेजी जाने वाली सामग्री का कोविड-19 काल के बाद सबसे अच्छा प्रयोग हो रहा है। कोविड-19 काल से पहले 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा केवल दैनिक श्यामपट्ट कार्य ही प्रेषित किया जाता था। कोविड-19 काल में हुई डिजिटल ट्रेनिंग के बाद कई नए साथी जुड़े जिनकी सहायता से विषयवार और कक्षावार शिक्षण सामग्री का निर्माण और प्रेषण शुरू किया गया। यह सामग्री नियमित शिक्षण में बहुत प्रभावी है। शिक्षकों को अब लैसन प्लान बनाने की ज़रूरत नही होती है। वे इन कंटेंट से विषयों को आसानी से पढ़ा सकते हैं। इसका एक बड़ा फ़ायदा यह भी मिला कि जिन विद्यालयों में संबंधित विषय के शिक्षक नहीं हैं, वहाँ अन्य विषय के शिक्षक इसका प्रयोग करके विषयों का शिक्षण कर लेते हैं। शिक्षकों के मोबाइल में डिजिटल सामग्री उपलब्ध होने से इसका प्रयोग वे कभी भी कर पा रहे हैं व कई शिक्षक इन डिजिटल शैक्षिक इमेज का प्रयोग सीधे प्रोजेक्टर के माध्यम से करके

© NCERT not to be republished

स्मार्ट कक्षाओं का संचालन सरकारी विद्यालय में कर रहे हैं।

कोविड-19 काल में ऑनलाइन प्रशिक्षणों में हमें पता लगा कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय आय एवं योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा की पूरी जानकारी ही शिक्षकों को नहीं है, तो मिशन से जुड़े शिक्षकों को ऑनलाइन कार्यशाला के माध्यम से इसकी जानकारी उपलब्ध कारवाई गई और छात्रों की तैयारी के लिए आग्रह किया गया। टेक्निकल टीम और मिशन के प्रमुख शिक्षक साथियों की मदद से डिजिटल सामग्री तैयार करके सौ से अधिक समूहों में नियमित भेजना शुरू किया गया। शिक्षकों ने इनका प्रयोग छात्रों की होने वाली परीक्षा की तैयारी में किया। उसी वर्ष हम प्रतिभागी छात्रों की संख्या दुगनी करने में सफल रहे। बाद में इस प्रयोग को शिक्षा निदेशक बेसिक सर्वेन्द्र विक्रम जी द्वारा सपोर्ट मिला और उनके माध्यम से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को अधिकतम छात्रों को शामिल करने का निर्देश दिया गया। उसका परिणाम यह हुआ कि कभी जिन जनपदों मे एक सैकड़ा से भी कम छात्र परीक्षा में शामिल होते थे, आज उन्हीं जनपदों में हज़ारों छात्र परीक्षा में शामिल होकर सफलता हासिल कर रहे हैं। वर्तमान में 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा शिक्षकों की मदद से छात्रों को निःशुल्क ऑनलाइन लाइव क्लास और व्हाट्सएप के माध्यम से परीक्षा की तैयारी लगातार करवाई जा रही है और मासिक टेस्ट के माध्यम से इसका परीक्षण भी किया जाता है।

कोविड-19 काल में आपसी संवाद के लिए गूगल मीट और ज़ूम जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग शिक्षकों ने सीखा और साथ ही अभिलेखों के डिजिटल निर्माण की जानकारी भी हासिल की। अब उसका प्रयोग शिक्षा में बड़े स्तर पर होने लगा है। कोविड-19 काल के बाद आपसी संवाद के लिए एक नया एप कुटुंब मिला। 'मिशन शिक्षण संवाद' मंच ने इसकी मदद से एक लाख से अधिक शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को आपसी संवाद, कक्षा-कक्ष के प्रयोगों, टी.एल.एम. और शिक्षण कौशल को साझा करने के लिए इसमें जोड़ा गया। वर्तमान में सभी राज्यों से मिलाकर 1 लाख 24 हज़ार लोग एक मंच में शैक्षणिक चर्चा और गतिविधियाँ साझा कर पा रहे हैं। यह समस्त आँकड़ें मई, 2021 में एकत्रित किए गए। तत्पश्चात जब कक्षाएँ सामान्य रूप से शुरू हो गईं तब भी मिशन के शिक्षकों ने अपना कार्य जारी रखा एवं बाद में की गई गतिविधियों की जानकारी अक्तूबर, 2022 तक एकत्रित की गई।

शिक्षकों के अनुभव एवं विचार

- मिशन का उद्देश्य कोविड-19 काल में सभी शिक्षकों को डिजिटल प्लेटफार्म का शिक्षा में बेहतर प्रयोग सिखाना था, ताकि हम सरकारी विद्यालय के छात्रों से जुड़कर उन्हें शिक्षा से जोड़े रख सकें जिसमें हम काफ़ी हद तक सफल रहे। कोविड-19 काल के बाद शिक्षक अपने शिक्षण में डिजिटल माध्यम, ऑनलाइन प्लेटफार्म, एजुकेशनल एप का भरपूर प्रयोग कर पा रहे हैं। हमें भी अब बेहतर डिजिटल एजुकेशनल कंटेंट शिक्षकों से मिल पा रहे हैं और व्हाट्सएप, फेसबुक, वेबसाइट आदि के माध्यम से जुड़े

© NCERT not to be republished

'मिशन शिक्षण संवाद' के लाखों शिक्षक इनका प्रयोग अपने दैनिक शिक्षण में कर पा रहे हैं।

एक *शिक्षक*

संस्थापक 'मिशन शिक्षण संवाद मंच'

- 'मिशन शिक्षण संवाद' का उद्देश्य ज़्यादा-से-ज़्यादा शिक्षकों को शैक्षिक सामग्री और शैक्षिक चर्चा से जोड़ना था। कोविड-19 काल में हमने संवाद के नए रास्ते खोजे और शिक्षकों ने उन माध्यमों का प्रयोग बच्चों को जोड़ने और उनके शिक्षण के लिए किया। कोविड-19 काल के बाद व्हाट्सएप के इन समूहों का प्रयोग शैक्षिक सामग्री के आदान-प्रदान के लिए सबसे कारगर साबित हुआ। अब हम हज़ारों शिक्षकों और छात्रों को सीधे शैक्षिक सामग्री कक्षा शिक्षण के लिए भेज पा रहे हैं, जिनका प्रयोग नियमित शिक्षण में लगातार हो रहा है। कोविड-19 काल में दी गई ट्रेनिंग से अब शिक्षक न्यूनतम संसाधनों में डिजिटल संसाधनों का बेहतर उपयोग शिक्षण में करने लगे हैं।

एक *शिक्षक*

संयोजक 'मिशन शिक्षण संवाद'

- हमें मिशन की शिक्षण सामग्री विद्यालय खुलने से पूर्व अपने व्हाट्सएप समूह पर मिल जाती है, जो पूरे दिन के क्रियाकलापों के लिए पर्याप्त होती है। इसकी मदद से हम दिन भर बच्चों के साथ शिक्षण कर पाते हैं। 'मिशन शिक्षण संवाद', में दैनिक योग, श्यामपट्ट कार्य, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगी परीक्षा सामग्री और शिक्षण गतिविधियाँ सभी मिल जाती हैं जिससे हमारी कक्षाएँ काफ़ी रोचक हो रही हैं।

एक *शिक्षिका*, प्रा.वि. अदलपुर

वि.ख.– डिलारी, जनपद, मुरादाबाद

- 'मिशन शिक्षण संवाद' का पढ़ाई से प्रतियोगिता तक का अभियान बहुत अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र अब आसानी से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर पा रहे हैं, जो उनके लिए एक सपना मात्र था। जो छात्र परीक्षा में सफल नहीं भी हो रहे हैं उन्हें भविष्य में इस तैयारी का फायदा ज़रूर मिलेगा। बच्चों के अभिभावकों में नवोदय और राष्ट्रीय आय एवं योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा के काफ़ी उत्साह दिख रहा है। इन परीक्षाओं में जनपद के कई छात्रों के सफल होने से अब सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास बढ़ा है।

एक *शिक्षक*, प्रा.वि. भिटारी

काशी विद्यापीठ, वाराणसी

- 'मिशन शिक्षण संवाद' ने आज तक शिक्षण सामग्री को भेजने में कभी कोई गैप नहीं किया। अगर किसी दिन किसी जनपदीय समूह में सामग्री भेजने में देर हो जाती है तो उस जनपद के शिक्षक फोन करके पूछने लगते हैं। अब तो कुटुंब पर छात्रों के जुड़ने से कई छात्र सीधे ऑनलाइन क्लास, परीक्षा फॉर्म और मासिक टेस्ट के विषय में बात करते हैं, इसलिए भी हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम किसी भी हालत में विद्यालय खुलने से पूर्व 150 से अधिक समूहों में शिक्षण सामग्री भेज दें, ताकि जनपदीय समूह इसे अपने अन्य समूहों में भेज सकें।

एक *शिक्षक*,

संयोजक, टेक्निकल टीम, 'मिशन शिक्षण संवाद'

कस्तूरबा आवासीय बालिका विद्यालय, हमीरपुर

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों को आभासी माध्यम से भेजे गए कार्य एवं गतिविधियाँ

गतिविधियाँ

आकृति 8

© NCERT not to be republished

व्हाट्सएप के माध्यम से शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान

आकृति 9

© NCERT not to be republished

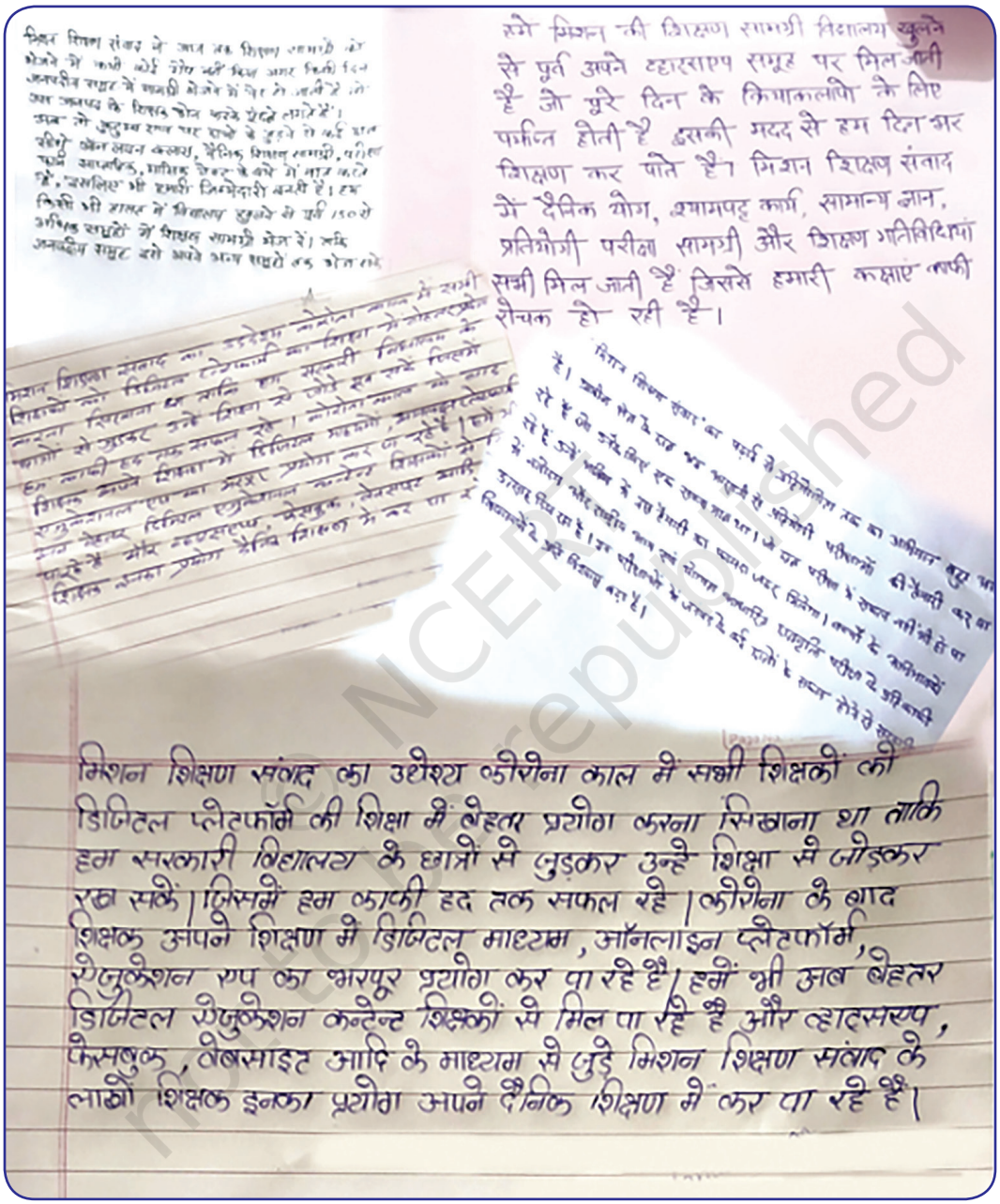

हमें मिशन की शिक्षण सामग्री विद्यालय खुलने से पूर्व अपने व्हाट्सएप समूह पर मिल जाती है जो पूरे दिन के क्रियाकलापों के लिए पर्याप्त होती है इसकी मदद से हम दिन भर शिक्षण कर पाते हैं। मिशन शिक्षण संवाद में दैनिक योग, श्यामपट्ट कार्य, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगी परीक्षा सामग्री और शिक्षण गतिविधियां सभी मिल जाती हैं जिससे हमारी कक्षाएं काफी रोचक हो रही है।

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य कोरोना काल में सभी शिक्षकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म की शिक्षा को बेहतर प्रयोग करना सिखाना था ताकि हम सरकारी विद्यालय के छात्रों से जुड़कर उन्हें शिक्षा से जोड़कर रख सकें। जिसमें हम काफी हद तक सफल रहे। कोरोना के बाद शिक्षक अपने शिक्षण में डिजिटल माध्यम, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, एजुकेशन एप का भरपूर प्रयोग कर पा रहे हैं। हमें भी अब बेहतर डिजिटल एजुकेशन कन्टेन्ट शिक्षकों से मिल पा रहे हैं और व्हाट्सएप, फेसबुक, वेबसाइट आदि के माध्यम से जुड़े मिशन शिक्षण संवाद के लाखों शिक्षक इनका प्रयोग अपने दैनिक शिक्षण में कर पा रहे हैं।

आकृति 10

© NCERT not to be republished